



जब आप पहाड़ों और तूफानों का सामना करते हैं!

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश की रूपरेखा और छोटा समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

**जब आप पहाड़ों और आँधियों का सामना करते हैं!**

र वि वा र का सं दे श  
र वि वा र , 12 अप्रैल 2026 – संदेश की रूपरेखा

प्रभु यीशु – हमारा उदाहरण, हमारा आदर्श

**1 कुरिन्थियों 15:45-49 (HINOVBSI)**

45 जै सा लि, 'ख़ाहल्लौ मनुष्य आदम जीवित प्राणी बना।' अंतिम आदम जीवन देने वाली आत्मा बना।

46 परन्तु आत्मिक पहले नहीं, बल्कि प्राकृतिक है, उसके बाद आत्मिक।

47 पहला मनुष्य पृथ्वी का है, अर्थात् मिट्टी का; दूसरा मनुष्य स्वर्ग से है, अर्थात् प्रभु है।

48 जैसा मिट्टी का मनुष्य है, वैसे ही मिट्टी के लोग हैं; और जैसा स्वर्गीय है, वैसे ही स्वर्गीय लोग हैं।

49 और जैसे हमने मिट्टी वाले का स्वरूप धारण किया है, वैसे ही हम स्वर्गीय का भी स्वरूप धारण करेंगे।

आदम पहला "प्रतिरूप" मनुष्य था, परन्तु वह असफल हो गया और हम सबने उसका स्वरूप धारण किया—हम सब पाप में जन्मे हैं। यीशु मसीह अंतिम आदम, दूसरा मनुष्य है—परमेश्वर का सिद्ध प्रतिरूप मनुष्य। हमें उसका स्वरूप धारण करना है और उसके समान बनना है। परमेश्वर ने ठहराया है कि हम उसके पुत्र के स्वरूप में ढाले जाएँ (रोमियों 8:29)।

**इब्रानियों 10:5,7,9 (HINOVBSI)**

5 इस कारण जब वह संसार में आया, तो कहा: "बलिदान और भेंट तूने नहीं चाही, परन्तु मेरे लिए एक शरीर तैयार किया।"

7 तब मैंने कहा, "दे , ख़ैं आ गया हूँ—पुस्तक में मेरे विषय में लिखा है—हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूँ।"

9 तब वह कहता है, "दे , ख़ैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।" वह पहले को हटाता है, ताकि दूसरे को स्थिर करे।

प्रभु यीशु ने जो कुछ कहा और किया, वह सब पिता की इच्छा की अभिव्यक्ति था। इसलिए हम निश्चय के साथ यीशु का अनुसरण कर सकते हैं—और जब हम ऐसा करते हैं, तो हम परमेश्वर की सिद्ध इच्छा में चलते हैं।

प्रभु यीशु—सिद्ध मनुष्य, परमेश्वर का प्रतिरूप—एक गिरे हुए संसार में आए और हमें दिखाया कि ऐसे संसार में परमेश्वर हमें कैसे जीना चाहता है।

**यीशु ने क्या सिखाया?**

**मरकुस 11:12-14, 20-26 (HINOVBSI)**



जब आप पहाड़ों और तूफानों का सामना करते हैं!

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश की रूपरेखा और छोटा समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

(संक्षेप में मुख्य बातें:)

- परमेश्वर पर विश्वास रखो।
- पहाड़ से कहो—उसे हटने की आज्ञा दो—और विश्वास करो।
- प्रार्थना करो और विश्वास करो कि वह हो चुका है—और तुम पाओगे।
- अपना हृदय शुद्ध रखो (क्षमा करो—कड़वाहट, घमण्ड, जलन आदि को दूर करो)।

---

## यीशु ने क्या किया?

### मरकुस 4:35-41 (HINOVBSI)

जब आँधी और तूफान आया, तब यीशु ने हवा और समुद्र से कहा—“शान्त हो जा!” और सब कुछ शान्त हो गया।

यीशु ने हमें दिखाया कि जब हम जीवन में आँधियों और तूफानों का सामना करते हैं, तब हमें क्या करना चाहिए।

उन्होंने अपने चेलों को चुनौती दी—

“तुम क्यों डरते हो? तुम्हारा विश्वास कहाँ है?”

---

## जब आप पहाड़ों और आँधियों का सामना करें, तो उस परिस्थिति पर परमेश्वर में अपने विश्वास को लागू करें

- परमेश्वर पर विश्वास रखें।
- पहाड़, आँधी और लहरों से बात करें।
- प्रार्थना करें और विश्वास रखें कि कार्य पूरा हो चुका है।
- परमेश्वर के सामने अपना हृदय शुद्ध रखें (अक्षमाशीलता, कड़वाहट, घमण्ड, जलन, क्रोध आदि को दूर करें)।



जब आप पहाड़ों और तूफ़ानों का सामना करते हैं!

रविवार का संदेश

संदेश नोट्स, संदेश की रूपरेखा और छोटा समूह अध्ययन मार्गदर्शिका